विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में "Birds in and around Mussoorie" पुस्तक विमोचन पर माननीय राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(दिनांक 27 सितम्बर, 2024)

जय हिन्द!

विश्व पर्यटन दिवस के इस सुअवसर पर साहित्य और प्रकृति प्रेमियों के बीच पहुँचकर मुझे अपार खुशी की अनुभूती हो रही है। यहां उपस्थित जन समुदाय को मेरी ओर से विश्व पर्यटन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

आज इस शुभ अवसर पर मैं लेखक संजय कुमार को टाइम्स ऑफ इंडिया के सहयोग से लिखी गई, उल्लेखनीय पुस्तक "Birds in and around Mussoorie" के इस विशेष संस्करण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ, जिसमें मसूरी की प्राकृतिक सुंदरता और पक्षी विविधता को बारीकी से दर्शाया गया है। यह पुस्तक हमारे सौन्दर्य से परिपूर्ण इस क्षेत्र में पनपने वाले जीवन के समृद्ध ताने–बाने का प्रमाण है, जो पाठकों को खूबसूरत परिदृश्यों और जीवंत पारिस्थितिकी तंत्रों में भी पूरी तरह खो जाने का मौका देती है।

मेरा मानना है कि हर लेखक, अपनी लोकप्रियता का एक हिस्सा अपनी लिखी किताबों के कारण अवश्य पाता है। मैं आप सभी को श्री संजय कुमार की पुस्तक में निहित खोज की भावना को आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित

करता हूँ। यह हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करने वाली उल्लेखनीय पक्षी विविधता को देखने, सराहने और संरक्षित करने का आह्वान है। यह पुस्तक केवल शब्दों से भरे पन्नों से कहीं अधिक प्रकृति से जुड़ने और इसकी सुंदरता में शांति व सुकून पाने हेतु निमंत्रण है।

साथियों,

पहाड़ों की रानी मसूरी, पक्षी विविधता का भी खजाना है। जीवंत प्रवासी पक्षियों से लेकर स्थानिक प्रजातियों तक, हमारी पहाड़ियाँ और घाटियाँ प्रकृति की आवाजों से जीवंत हैं, जो स्थानीय लोगों और आगंतुकों दोनों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।
देवभूमि उत्तराखंड वास्तव में प्रकृति प्रेमियों, साहसिक कार्य करने वाले लोगों और आध्यात्मिक साधकों के लिए एक अभ्यारण्य है। हमारा प्रदेश प्राचीन पवित्र नदियों, राजसी पहाड़ों और हरे–भरे जंगलों से सुशोभित है। इसकी सुंदरता इसके मनोरम दृश्य और हर दृष्टिकोण से अनुकूल वातावरण सभी को सुकून और शांति प्रदान करती है।

आज, विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर पर्यटन के महत्व पर चर्चा करते हुए हमारे सम्मानित पैनलिस्टों ने हमारी प्राकृतिक विरासत के अपार मूल्य का उल्लेख किया, जिसमें असंख्य ट्रैक और ट्रेल्स शामिल हैं जो

साहसी लोगों को राजसी परिदृश्यों के बारे में पता लगाने हेतु आकर्षित करते हैं।

पर्यटन, अपने सभी रूपों में, उत्तराखण्ड की सुंदरता को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मैं आज अपने पैनलिस्टों को उनकी अंतर्दृष्टि के लिए धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि हम भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को संरक्षित करते हुए अपनी प्राकृतिक संपदा को बेहतर तरीके से कैसे बढ़ावा दे सकते हैं।

साथियों,

पर्यटन के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए ही आज के दिन को विश्व पर्यटन दिवस के तौर पर मनाया जाता है। पर्यटन न केवल विभिन्न संस्कृतियों और स्थानों को जोड़ता है, बल्कि यह वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख हिस्सा भी है, जो कई देशों के लिए आय और रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

पर्यटन केवल यात्रा और मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से हम पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के साथ–साथ स्थानीय समुदायों के विकास में भी अपना योगदान दे सकते हैं। यह हमें एक–दूसरे की

संस्कृतियों, परंपराओं, और इतिहास को जानने और समझने का मौका देता है।

जैसा आप सभी को मालूम हैं कि इस वर्ष विश्व पर्यटन दिवस 2024 की थीम, 'पर्यटन और शांति' (Tourism and Peace) है, इस थीम का उद्देश्य है कि पर्यटन समुदायों को बदल सकता है– रोजगार पैदा कर सकता है, समावेश को बढ़ावा दे सकता है और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत कर सकता है।

साथियों,

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान की शुरुआत की। इस पहल का मुख्य उद्देश्य वर्तमान समय में बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग से निजात पाना एवं इस धरा के भविष्य को सुरक्षित रखना है। यह अभियान हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि एक हरियाली और समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। मैं सभी लोगों से अपील करता हूँ कि इस अभियान का हिस्सा बनकर इसको जन आंदोलन बनाने में अपना अहम योगदान दें।

अपने लुभावने परिदृश्यों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध उत्तराखण्ड भारत में पर्यटन के लिए एक

महत्वपूर्ण गंतव्य के रूप में उभरा है। यह उत्तराखण्ड की आर्थिकी का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। इससे राज्य में सभी क्षेत्रों में आजीविका के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं।

उत्तराखण्ड आने वाले पर्यटक न केवल प्राचीन कहानियों से भरे भव्य मंदिरों को देख सकते हैं, बल्कि हमारे परिदृश्य में बहने वाली स्वच्छ, पारदर्शी नदियों का भी आनंद ले सकते हैं, जो अपने मधुर प्रवाह से हमें आनंदित करती हैं। यहां की प्रत्येक यात्रा रोमांच, शांति और अज्ञात चीजों की खोज के रोमांच से भरपूर हो सकती है। मेरा स्थानीय लोगों और पर्यटकों से विनम्र आग्रह है कि देवभूमि की स्वच्छता और सुंदरता को बनाएं रखने में अपना सहयोग दें।

दिन–प्रतिदिन अपने राज्य में देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। जिससे उत्तराखण्ड को पर्यटन प्रदेश बनाने की मुहिम आगे बढ़ रही है। साथ ही ऐसे में नए पर्यटन स्थलों को विकसित करने की जरूरत महसूस की जा रही है। इसके लिए सरकार ने हाल ही में पर्यटन नीति को मंजूरी दी है। जिसमें 28 प्रकार की गतिविधियों को पर्यटन का हिस्सा बनाया गया है।

साथियों,

यह हम सभी के लिए प्रसन्नता का विषय है कि ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने के प्रयासों के तहत, अपने

प्रदेश के चार गांवों को आज ही अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस पर केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की ओर से 'सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। इस पुरस्कार के लिए चुने गए चार गांवों में उत्तरकाशी से जखोल और हर्षिल, पिथौरागढ़ से सीमांत गुंजी और नैनीताल से सुपी शामिल हैं।

हमारा प्रदेश प्रकृति की अभूतपूर्व सुंदरता से ओत–प्रोत, पर्यटन की अथाह संभावनाएं लिए हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। गढ़वाल क्षेत्र की दुर्गम पहाड़ियां जहां साहसिक लोगों और पर्वतारोहियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, वहीं कुमाऊं की सुरम्य वादियां सबको अपनी ओर बरबस खींच ले जाती हैं। पुराने समय से ही मशहूर गंतव्य शहर मसूरी, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और नैनीताल के अलावा अब कई नए गंतव्य जैसे लैंसडाउन, नई टिहरी, चौबटिया, औली, पौड़ी, भीमताल, उत्तरकाशी, जौनसार, धनौल्टी भी पर्यटकों की नईं पसंद बन कर उभरे हैं।

देवभूमि उत्तराखण्ड अपने धार्मिक पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन अब राज्य की सरकार ने ग्रामीण और साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। इसके तहत राज्य के विभिन्न गांवों को पर्यटन के नए केंद्रों के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह प्रयास न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार और आजीविका के नए अवसर

भी खोलेगा। मुझे विश्वास है कि उत्तराखण्ड देश के अग्रणी पर्यटन स्थलों में अपनी पहचान को और भी मजबूत करेगा।

साथियों,

हमें अपने पेशे में जो कुछ भी करना है, उसमें मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। दूसरों का भला करने के लिए ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं है। इसके लिए बस ईमानदारी से प्रयास करने की जरूरत है। हम अपने प्रयास में सफल होते हैं या असफल, यह अलग बात है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने कहा है कि परोपकार ही परम धर्म है – दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार करना आध्यात्मिकता का सर्वोच्च रूप है। हमें मानव जाति के साथ ही पूरी प्रकृति के साथ भी अच्छा व्यवहार रखना होगा।

अंत में, मैं इस आयोजन और हमारे प्रदेश में साहित्य और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आप सभी से श्री कुमार के काम से प्रेरणा लेने, उत्तराखण्ड के परिदृश्यों का पता लगाने और हमारे आस–पास की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत में पूरी तरह खो जाने का आग्रह करता हूँ।

आइए! हम मसूरी की सुंदरता और उत्तराखण्ड में पर्यटन की अपार संभावनाओं का जश्न मनाएं! साथ ही देवभूमि को स्वच्छ एवं सुंदर रखने, प्रकृति के संरक्षण और इसके संवर्धन का संकल्प लें।

जय

हिन्द!